JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधुनिक संस्कृत साहित्य की समृद्धि में श्रीसीतारामभट्ट पर्वणीकर का योगदान

प्रणव पाण्डेय
(एम.ए.संस्कृतविभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)
नेट (यू.जी.सी. नई दिल्ली)
मो. 7017458783

आधुनिक संस्कृत साहित्य के देदीप्यमान स्तम्भ महाकवि **श्रीसीतारामभट्ट पर्वणीकर**, जयपुर नरेश **सवाई जयसिंह तृतीय** के समकालीन थे। ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार महाराज **विष्णुसिंह** के देहान्त के बाद सन् 1699 ई. में महाराज **सवाई जयसिंह द्वितीय** सिंहासनारूढ़ हुए, जिन्होंने **'जयपुर नगर'** की स्थापना की। इनके बाद सन् 1743 ई. में इनके पुत्र **सवाई ईश्वरी सिंह** राजा बने। तत्पश्चात् सन् 1750 ई. में सवाई ईश्वरी सिंह की आकस्मिक मृत्यु के बाद उनके पुत्र **सवाई माधवसिंह प्रथम** सिंहासनारूढ़ हुए, जिन्होंने सन् 1767 ई. तक शासन किया। माधवसिंह के बाद इनके दो पुत्रों (**पृथ्वीसिंह** 1767–78 ई. एवम् **प्रतापसिंह** 1778–1803 ई.) ने शासन किया। सन् 1803 ई. में प्रतापसिंह के पुत्र **जगतसिंह** सिंहासनाररूढ हुए। तत्पश्चात् जगतसिंह के पुत्र **सवाई जयसिंह तृतीय** सन् 1818 में सिंहासन पर बैठे। इसी जयसिंह तृतीय के शासनकाल में महाकवि **श्रीसीतारामभट्ट पर्वणीकर** जी को राज्याश्रय प्राप्त हुआ था। अतः सुस्पष्ट है कि राजकवि का स्थान प्राप्त करने वाले पर्वणीकर जी उस समय कम से कम 25 वर्ष के अवश्य रहे होंगे। अर्थात् लगभग 1793 ई. में पर्वणीकर जी का जन्म हुआ होगा।

श्रीलक्ष्मणभट्ट एवं श्रीमती सुहीरा (सती) को श्रीसीतारामभट्ट पर्वणीकर के पिता एवं माता होने का गौरव प्राप्त है। ध्यातव्य है कि पर्वणीकर जी के पूर्वज हैदराबाद के सन्निकट औरंगाबाद जनपद के अन्तर्गत **'पांथरी परवणी'** ग्राम के निवासी थे, जो अपने नाम के साथ 'पर्वणीकर' लगाते थे, जैसा कि महाराष्ट्रीय लोगों के नाम के साथ खाण्डिलकर, मुँसलगाँवकर, किंजवडेकर इत्यादि **'कर'** जोड़कर उपनाम लिखने की परम्परा आज भी जीवित है। कालक्रमानुसार पर्वणीकर–वंशोत्पन्न इनके कोई पूर्वज औरंगाबाद से बिठूर (कानपुर) चले आये और वहीं पर स्थायी रूप से रहने लगे। कुछ दिनों बाद इनकी एक शाखा 'बिठूर' से ग्वालियर आ पहुँची, जो राजकीय संरक्षण में फलती–फूलती रही। यह शाखा ग्वालियर में आज भी विद्यमान है। कुछ पीढ़ियों के बाद ग्वालियर की इसी शाखा से सम्बद्ध श्रीमाधवभट्ट 'पर्वणीकर' विद्याध्ययन हेतु काशी (वाराणसी) चले गये तथा वहीं से आमेर के महाराज विष्णुसिंह की यशोगाथा सुनकर **'आमेर'** चले आये और वहीं पर महाराज विष्णुसिंह का राज्याश्रय पाकर स्थायी रूप से निवास करने लगे।[1]

महाराज विष्णुसिंह ने श्रीमाधवभट्ट पर्वणीकर के शास्त्रीय वैदुष्य, लौकिकज्ञान एवं व्यवाहर कुशलता से प्रसन्न होकर माधवभट्ट को राजकुमार सवाई जयसिंह द्वितीय के शिक्षक (गुरु) के गौरवपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित किया। अपने पूर्वज श्रीमाधवभट्ट पर्वणीकर के सम्बन्ध में श्री सीतारामभट्ट पर्वणीकर ने **'जयवंशम्'** महाकाव्य के दशम सर्ग में स्वयमेव इस तथ्य का उल्लेख किया है। ज्ञातव्य विषय है कि **'जयवंशमहाकाव्यम्'** के दशम सर्ग में श्रीमाधवभट्ट पर्वणीकर एवम् उनके वंश के विषय में पर्याप्त उल्लेख किया गया है।[2] इसके अतिरिक्त कुमारसम्भवम् (कालिदास) के आठ से सत्रह सर्गों के प्रथम टीकाकार श्रीसीतारामभट्ट पर्वणीकर ने प्रत्येक सर्ग की टीका के अन्त में अपना परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया है।[3]

'कुमारसम्भवम्' के अन्तिम (सत्रहवें) सर्ग की टीका की समाप्ति पर महाकवि पर्वणीकर–प्रदत्त आत्मविषयक विवरण से पता चलता है कि पर्वणीकर जी की माता का नाम **'सुहीरा'** था, जो सम्भवतः उनके पिताश्री लक्ष्मणभट्ट के निधनोपरान्त सती हो गयी होगीं। अतः महाकवि ने कहीं–कहीं अपनी माता को **'सती'** कहकर भी सम्बोधित किया है।[4] विभिन्न उद्धरणों

एवं विवरणों से पर्वणीकर–प्रणीत कुल 41 ग्रन्थों का उल्लेख प्राप्त होता है। स्वयं पर्वणीकर जी ने कुमारसम्भवम् महाकाव्य की टीका की समाप्ति पर अपने सत्ताईस ग्रन्थों का उल्लेख किया है, जिनमें काव्यविषयक टीका सहित पाँच ग्रन्थ, स्तोत्रों से सम्बन्धित दस ग्रन्थ, छन्दशास्त्रीय एक ग्रन्थ, गणितविषयक एक ग्रन्थ, साहित्यशास्त्रीय तीन ग्रन्थ, दो काव्यों की टीका तथा पाँच स्वरचित ग्रन्थों की टीकाएँ हैं।[5] इस प्रकार इन कृतियों की संख्या कुल सत्ताईस सिद्ध हो जाती हैं। इस पद्य का रचनाकाल 1822 ई. है। अतः स्वाभाविक है कि इसके बाद भी पर्वणीकर जी ने कुछ अन्य रचनायें की होंगी, जिन्हें मिलाकर कुल 41 रचनाएँ सिद्ध होती हैं। यहाँ पर श्रीसीतारामभट्ट पर्वणीकर–प्रणीत प्रमुख 11 काव्यकृतियों का संक्षिप्त एवं प्रामाणिक विवरण निम्नलिखित हैं–

1. नायिकावर्णनम्
2. शृंगारलहरी
3. श्लोकबद्धासिद्धांतकौमुदी
4. मुहूर्तसारः
5. बुधवर्या वर्णनम्
6. सूर्याष्टकम्
7. नृपविलासमहाकाव्यम्
8. नलविलासमहाकाव्यम्
9. जयवंशमहाकाव्यम्
10. राघवचरित्रमहाकाव्यम्
11. लघुरघुमहाकाव्यम्

1. नायिकावर्णनम्– श्रीपर्वणीकर जी की यह कृति 49 पद्यों में निबद्ध है, जिनमें सभी नायिकाओं, उनकी सहचारिकाओं एवं दूती आदि का विवेचन संक्षेप में वर्णित है। इसका मंगलाचरण भगवान् श्रीकृष्ण एवं भगवती राधिका के युगल रूप में प्रस्तुत है, क्योंकि रसराज शृंगार के ये ही नायक–नायिका माने जाते हैं। इस रचना में श्रीसीतारामभट्ट पर्वणीकर ने अपना नाम **रामशर्मा** बतलाया है।[6]

2. शृंगारलहरी– शृंगाररस प्रधान इस काव्य में कुल 21 पद्य हैं, जिनमें संयोग एवं वियोग, दोनों शृंगारों का वर्णन किया गया है। इस काव्य का अन्तिम पद्य यहाँ पर उद्धृत है–

कवीनामन्येषां मदहरणदक्षा क्षणकरी,
रसामन्दास्वाद–व्यसन – रसिकानामविरतम्।
कृता रामेणेयं कवि–जन–वरेणेति मतिना,
रसापूर्णा नित्यं भुवि लसतु शृंगारलहरी।।[7]

3. श्लोकबद्धा सिद्धान्तकौमुदी– सूत्रात्मक सिद्धान्तकौमुदी व्याकरणग्रन्थ का छन्दोबद्ध पद्यात्मक स्वरूप इस व्याकरणग्रन्थ में देखने को मिलता है। इसकी रचना पण्डित श्रीसीतारामभट्ट पर्वणीकर ने महाराज जयसिंह तृतीय की आज्ञा से की थी। सम्प्रति यह ग्रन्थ अपूर्ण रूप में उपलब्ध होता है। इस काव्य के कुछ पद्य यहाँ उद्धृत हैं–[8]

प्रणिपत्य मुनीम् तांस्त्रीन् तद्वचांसि विविच्य च।
सिद्धान्तकौमुदीम् सर्वां श्लोकबद्धाम् करोम्यहम्।।
गुणवृद्धीति शब्दाभ्यां गुण – वृद्धिविधिर्भवेत्।
तत्रैक इति षष्ठ्यन्तम् पदम् समुपतिष्ठते।।

4. मुहूर्तसारः– 47 पद्यात्मक प्रस्तुत ज्योतिषशास्त्रीय लघुकाय ग्रन्थ में कवि ने ज्योतिषशास्त्रीय गूढ़ तत्त्वों को अत्यन्त सरल शब्दावली में प्रस्तुत किया है। इस ग्रन्थ के प्रथम पद्य में निबद्ध इसका मंगलाचरण यहाँ पर प्रस्तुत है–

हरिं प्रणम्य क्षणदं जनानाम् पद्मालये सेवितपादपद्मम्।
रामाभिधानः कविरुन्नतेच्छोः मुहूर्तसारम् सरसं करोमि।। 1 ।।

5. बुधवर्या वर्णनम्– इस रचना में कुल पाँच पद्य हैं, जिनमें श्रीजयरामभट्ट पर्वणीकर का वर्णन किया गया है। श्री जयरामभट्ट का युवावस्था में ही स्वर्गवास हो गया था। श्रीसीतारामभट्ट पर्वणीकर की वंशावली के अनुसार, ये उनके मध्यम अग्रज थे। उनकी स्मृति में ही श्रीसीतारामभट्ट द्वारा ये पद्य रचे गए थे। इन पद्यों के लिपिकार श्रीनारायणभट्ट पर्वणीकर हैं।

6. सूर्याष्टकम्– श्रीसीतारामभट्ट पर्वणीकर ने 10 अष्टक स्तोत्रों की रचना की थी, जो पर्वणीकर संग्रहालय में उपलब्ध हैं। इनमें से 'सूर्याष्टकम्' सूर्यस्तोत्र के नाम से राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर में 7006 क्रमांक पर उपलब्ध है। इसमें तीन पत्रों में आठ श्लोक लिखे हुए हैं। नवम पद्य प्रशस्तिसूचक तथा फलसूचक है।[9] यहाँ पर एक बात ध्यान देने योग्य है कि 'सूर्याष्टकम्' के दशवें पद्य से दश स्तोत्रों की स्थिति का प्रमाण प्राप्त होता है।[10] जहाँ तक

'सूर्यस्तोत्र' की बात है, यह समस्यापूर्ति के रूप में रची गयी स्तोत्र–रचना है। इसके प्रत्येक पद्य के अन्त में **'मार्तण्डगदहरणाय तं प्रपद्ये'** चरण दिया गया है।[11] भगवान् **'मार्तण्ड'** रोग का विनाश एवं स्वास्थ्यवृद्धि करते हैं। इस प्रकार की कामना से इसमें सूर्यदेव की स्तुति की गई है।

7. नृपविलासमहाकाव्यम्– श्रीसीतारामभट्ट पर्वणीकर–प्रणीत **16 सर्गों** में निबद्ध 'नृपविलासमहाकाव्यम्' में **'नृपवीर'** नामक राजा का इतिवृत्त वर्णित है। इसकी उपजीव्यता का श्रेय श्रीहर्षप्रणीत नैषधीयचरितम् को प्राप्त है। 'नृपविलासः' की भाषाशैली सरल, संक्षिप्त एवं बोधगम्य है। इस महाकाव्य का नायक 'नृपवीर' एवं नायिका 'मदयन्ती' है। काव्यशास्त्रीय कसौटी पर इतिवृत्त, नेता एवं रसादि की दृष्टि से इसमें महाकाव्य के सभी गुण विद्यमान हैं। नायक 'नृपवीर' क्षत्रियवंशोत्पन्न धीरोदात्त प्रकृति का अनुकूल नायक है, जो सर्वगुण सम्पन्न बुद्धिमान तथा तेजस्वी है।[12] नायिका 'मदयन्ती' इस महाकाव्य की स्वकीया नायिका है, जो क्रमशः मुग्धा, मध्या तथा प्रगल्भा की अवस्थाओं को प्राप्त करती है। राजा **'नृपवीर'** के सम्मुख **'मदयन्ती'** की विशेषताओं का उल्लेख करते हुये 'शुक' का कथन यहाँ पर द्रष्टव्य है–[13]

विलोकमानस्य जनस्य चेतः, प्रमत्ततां प्रापयते यतः सा।
नरेन्द्रकन्या तदेव युक्तं, नामेति लोके मदयन्त्यवाप।।

8. नलविलासमहाकाव्यम्– श्रीसीतारामभट्ट पर्वणीकर–प्रणीत नलविलासमहाकाव्य **32 सर्गों** में निबद्ध है। नलविलास महाकाव्य[14] की उपजीव्यता का श्रेय महाभारत के **'नलोपाख्यान'** एवं श्रीहर्षप्रणीत **'नैषधीयचरितम्'** को प्राप्त है। इस महाकाव्य में प्रथम सर्ग से 22 वें सर्ग पर्यन्त 'नैषधीयचरितम्' के कथानक का अनुसरण किया गया है। तदनन्तर 23वें से 32वें सर्गपर्यन्त महाभारत का अवशिष्ट वृत्त वर्णित है। इसके अतिरिक्त नलविलास के अन्तिम श्लोक में इस महाकाव्य की रचना की तिथि वि.सं. 1889 (सन् 1832 ई.) उल्लिखित है।[15]

कथावस्तु की दृष्टि से 'नलविलासमहाकाव्यम्' के **प्रथम सर्ग** में नलवर्णन, **द्वितीय सर्ग** में दमयन्ती का वर्णन, **तृतीय सर्ग** में हंस का औदात्य वर्णन, **चतुर्थ सर्ग** में दमयन्ती–विप्रलम्भ वर्णन, **पंचम सर्ग** में नल में दौत्यकर्म का आरोप, **षष्ठ सर्ग** में शक्रादि दूतीप्रत्याख्यान, **सप्तम सर्ग** में नलकृत दमयन्ती का सर्वांग वर्णन, **अष्टम सर्ग** में भैमी–नल–संवाद, **नवम सर्ग** में नलदौत्य वर्णन, **दशम सर्ग** में स्वयम्वर का आरम्भ, **एकादश सर्ग** में सप्तद्वीपाधिपति वर्णन, **द्वादश सर्ग** में स्वयम्वर वर्णन, **त्रयोदश सर्ग** में पंचनली वर्णन, **चतुर्दश सर्ग** में इन्द्रादि के द्वारा वरप्रदान, **पंचदश सर्ग** में वीरवरालंकरण वर्णन, **षोडश सर्ग** एवं **सप्तदश सर्ग** में वधूप्रवेश वर्णन, **अष्टादश** एवं **एकोन्विंशति सर्ग** में प्रबोध वर्णन, **विंशति सर्ग** में नल–दमयन्ती–केलि वर्णन, **एकविंशति सर्ग** में नलाह्निक वर्णन, **द्वाविंशति सर्ग** में नल–दमयन्तीकृत चन्द्रोदय वर्णन, **त्रयोविंशति सर्ग** में नल में कलि का प्रवेश, **चतुर्विंशति सर्ग** में नल का राज्यभ्रंश, **पंचविंशति सर्ग** में दमयन्ती का त्याग, **षड्विंशति सर्ग** में दमयन्ती–प्रलाप, **सप्तविंशति सर्ग** में दमयन्ती का चेदिराज के नगर में गमन, **अष्टाविंशति सर्ग** में नल का ऋतुपर्णसभा–समागम, **एकोन्त्रिंशत् सर्ग** में दमयन्ती का पितृगृहगमन, **त्रिंशत् सर्ग** में ऋतुपर्ण का विदर्भराज की राजधानी में प्रवेश, **एकत्रिंशत् सर्ग** में नल–दमयन्ती का संयोग तथा **द्वात्रिंशत् सर्ग** में नल का पुनः राज्यप्राप्ति का वर्णन किया गया है। ज्ञातव्य है कि प्रथम सर्ग से अट्ठारहवें सर्गपर्यन्त प्रत्येक सर्ग के अन्त में **'आनन्द'** शब्द का प्रयोग करके पर्वणीकर जी ने इस महाकाव्य की आनन्दमयता को प्रदर्शित किया है।

काव्यशास्त्रीय दृष्टि से 'नलविलासमहाकाव्य' समस्त काव्यशास्त्रीय विशेषताओं से युक्त एक उच्चकोटि का महाकाव्य है। आलंकारिक दृष्टि से अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास, रूपक, काव्यलिंग, अर्थान्तरन्यास, अपह्नुति, व्यतिरेक, अप्रस्तुतप्रशंसा तथा समासोक्त्यलंकार का प्रयोग प्रमुखता से किया गया है। इस काव्य का अंगीरस **'शृंगार'** है। अंग के रूप में वीर, अद्भुत तथा भयानक का समुचित परिपाक दिखायी देता है। छन्दशास्त्र की दृष्टि से उपजाति, मालिनी, शिखरिणी, शालिनी, सुन्दरी, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, स्वागता, प्रहर्षिणी, पृथ्वी, मन्दाक्रान्ता, बसन्ततिलका, रथोद्धता, प्रमिताक्षरा, उपेन्द्रवज्रा, वंशस्थ, भुजंगप्रयात, द्रुतविलम्बित एवम् अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग किया गया है। भाषाशैली की दृष्टि से शृंगारिक स्थलों में वैदर्भीरीति का तथा अन्य स्थलों में पांचाली और लाटीरीति का प्रयोग हुआ है।

9. जयवंशमहाकाव्यम्–श्रीसीतारामभट्ट पर्वणीकरप्रणीत प्रस्तुत महाकाव्य में कुल **19 सर्ग** हैं। महाकवि पर्वणीकर जी ने ग्रन्थारम्भ में महाकवि कालिदास के 'रघुवंशम्' का अनुसरण किया है।[16] कथावस्तु की दृष्टि से 'जयवंशमहाकाव्यम्' के **प्रथम सर्ग** में सोढदेव के पुत्र दुर्लभराय (दूलहराय) का ढूढार प्रदेश में प्रवेश पूर्वक कतिपय स्थानों पर अधिकार करने का वर्णन किया गया है। **द्वितीय सर्ग** में काकिल की उत्पत्ति तथा उसके पराक्रमों का वर्णन है। **तृतीय सर्ग** में आमेर को राजधानी बनाने तथा काकिल की राज्यव्यवस्था का वर्णन है। **चतुर्थ सर्ग** में हनु, जानडदेव, प्रजोन, मलेशि (बीजलदेव), राजदेव, कीलन (कील्हण), कुन्तिल (कुन्तल) तथा योनसी (जोनसी) का क्रमशः आमेर के शासक के रूप में वर्णन किया

गया है। **पंचम सर्ग** में उदयकरण नृसिंह, वनवीर, उद्धरण, चन्द्रसेन, पृथ्वीराज, भारमल्ल, भगवतदास तथा मानसिंह प्रथम का वर्णन है। **षष्ठ सर्ग** में मानसिंह प्रथम तथा उनके भ्राता माधवसिंह के वर्णन के पश्चात् मानसिंह के दोनों पुत्रों (जगतसिंह एवं महासिंह) का वर्णन किया गया है। **सप्तम सर्ग** में मानसिंह की वीरता, उनके द्वारा जीते गये कतिपय देशों का उल्लेख एवम् आमेर में शिलामयी देवी की प्रतिमा की स्थापना का वर्णन है। **अष्टम सर्ग** में मिर्जाराजा जयसिंह का पराक्रम वर्णित है। **नवम सर्ग** में जयसिंह के पुत्र मिर्जाराजा रामसिंह प्रथम तथा पौत्र कृष्णसिंह एवं प्रपौत्र विष्णुसिंह का वर्णन किया गया है। **दशम सर्ग** में विष्णुसिंह के सुयोग्य शासन का वर्णन करते हुये, महाकवि पर्वणीकर जी ने अपने वंश का परिचय प्रस्तुत किया है। **एकादश सर्ग** में सवाई जयसिंह का विद्याविलास एवं युद्धकौशल का वर्णन है। **द्वादश सर्ग** में सवाई जयसिंह का ज्योतिषवैशारद्य, सम्राट् जगन्नाथ के आगमन की घटना, उनका यज्ञोपवीत संस्कार, गुरुपददीक्षा, कल्किमन्दिर की स्थापना, ताड़केश्वर महादेव की स्थापना, गोविन्ददेव–मन्दिर–निर्माण, रत्नाकर पौण्डरीक का आगमन तथा ब्रह्मपुरी का वर्णन प्राप्त होता है। **त्रयोदश सर्ग** में सवाई जयसिंह की दिग्विजय यात्रा वर्णन किया गया है। **चतुर्दश सर्ग** में ईश्वरीसिंह का जन्म, अश्वमेधयज्ञ का अनुष्ठान, यज्ञशालानिर्माण तथा पूर्णाहुति का उल्लेख किया गया है।[17] **पंचदश सर्ग** में सवाई माधवसिंह का जन्म एवं सवाई जयसिंह की मृत्यु का वर्णन है। **षोडश सर्ग** में सवाई ईश्वरीसिंह का शासन, गृहकलह एवं मृत्यु के साथ–साथ माधवसिंह का शासन वर्णित है। **सप्तदश सर्ग** में सवाई प्रतापसिंह की शासन व्यवस्था तथा प्रतापसिंह के द्वारा श्रीलक्ष्मणभट्ट पर्वणीकर को राजकुमार जगतसिंह के अध्यापक के रूप नियुक्त किये जाने का वर्णन है। **अष्टादश सर्ग** में जगतसिंह की शासनव्यवस्था एवं सवाई जयसिंह तृतीय का जन्म वर्णित है। ग्रन्थ के अन्त में **एकोन्विंशति सर्ग** में श्रीसीतारामभट्ट पर्वणीकर ने अपने आश्रयदाता का वर्णन किया है। ज्ञातव्य है कि श्रीसखारामभट्ट पर्वणीकर का उनके गुरु के रूप में वर्णन है, जो श्रीसीतारामभट्ट पर्वणीकर के ज्येष्ठ भ्राता थे। इस सर्ग के अन्त में महाकवि पर्वणीकर जी ने अपने आश्रयदाता जयसिंह तृतीय के दीर्घायुष्य की कामना करते हुये पंचदेवों की स्तुति की है।[18]

10. राघवचरित्रमहाकाव्यम्–श्रीसीतारामभट्ट पर्वणीकरप्रणीत राघवचरित्रमहाकाव्य[19] में कुल **15 सर्ग** हैं। कथावस्तु की दृष्टि से प्रस्तुत काव्यम् के **प्रथम सर्ग** में उत्तरकोशल की राजधानी साकेतपुरी एवं महाराज दशरथ तथा मृगयाप्रसंग में वर्णित श्रवणकुमार की कथा निबद्ध है। **द्वितीय सर्ग** में महाराज दशरथ का पुत्रेष्टियज्ञ, रामादि चारों भाइयों का जन्म तथा उनकी बालक्रीड़ा एवम् उनके विद्याभ्यास का वर्णन किया गया है। **तृतीय सर्ग** में महाराज दशरथ के पास विश्वामित्र का आगमन, उनके साथ राम लक्ष्मण का वनगमन तथा ताड़का एवं सुबाहु के वध की कथा वर्णित है। **चतुर्थ सर्ग** में जनकपुर में धनुषयज्ञ, सीतास्वयम्वर, विश्वामित्र के साथ राम लक्ष्मण का जनकपुरगमन, अहल्योद्धार तथा श्रीराम द्वारा धनुषभंग की कथा का वर्णन किया गया है। **पंचम सर्ग** में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न चारों भाइयों का क्रमशः सीता, उर्मिला, माण्डवी, श्रुतिकीर्ति, चारों बहनों के साथ विवाह, वर्णित है। **षष्ठ सर्ग** में चारों पुत्रों एवं चारों पुत्रवधुओं के साथ दशरथ का अयोध्यागमन तथा मार्ग में महर्षि परशुराम आगमन एवम् उनका वाग्युद्ध वर्णित है। **सप्तम सर्ग** में रामराज्याभिषेक की घोषणा, कैकेयी द्वारा राम के लिये 14 वर्ष के वनवास एवं भरत के लिये राज्य की याचना, राम, लक्ष्मण एवं सीता का वनगमन तथा महाराज दशरथ का देहान्त वर्णित है। **अष्टम सर्ग** में भरत एवं शत्रुघ्न का केकयदेश से अयोध्या आगमन, दशरथ की अन्त्येष्टि, चित्रकूट में भरत–राम–मिलन, श्रीराम की चरणपादुका के साथ भरत का अयोध्या आगमन एवं नन्दीग्राम में निवास वर्णित है। **नवम सर्ग** में श्रीराम का दण्डकारण्य में प्रवेश, सूर्पणखा–प्रसंग एवं खरदूषणवध का वर्णन किया गया है। **दशम सर्ग** में सीताहरण, सीतान्वेषण तथा गीधराज जटायु से सीता–सम्बन्धी वृत्तान्त की जानकारी वर्णित है। **एकादश सर्ग** में शबरी से श्रीराम का मिलन, सुग्रीव से श्रीराम की मित्रता, वालिवध, सीतान्वेषण, हनुमान का रावण की अशोकवाटिका में प्रवेश, सीता से हनुमान का साक्षात्कार, लंकादहन तथा तथा हनुमान का श्रीराम के पास प्रत्यागमन वर्णित है। **द्वादश सर्ग** में सेतुबन्ध, लंका पर आक्रमण, मेघनाद, कुम्भकर्णादि के साथ रावण का वध एवं श्रीराम का अयोध्या के लिये प्रस्थान वर्णित है। **त्रयोदश सर्ग** में श्रीराम का नन्दीग्राम में गमन तथा भरत के साथ राम का मिलन वर्णित है। **चतुर्दश सर्ग** में श्रीरामराज्याभिषेक तथा सीतानिर्वासन का उल्लेख किया है। **पंचदश सर्ग** में श्रीरामराज्य की सुव्यवस्था, लवणासुरवध, लव–कुश का जन्म, शम्बूकवध, अश्वमेधयज्ञ एवं श्रीराम का परलोकगमन वर्णित है।

11. लघुरघुमहाकाव्यम्– श्रीसीतारामभट्ट पर्वणीकर ने **19 सर्गों** में निबद्ध प्रस्तुत लघुरघुमहाकाव्य[20] की रचना **वि. सं. 1890** (सन् 1833 ई.) में की। इस महाकाव्य को महाकवि कालिदास प्रणीत **'रघुवंशम्'** का लघुरूप कहा जा सकता है। इस महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग में बीस–बीस पद्य हैं। अर्थात् यह महाकाव्य कुल 380 पद्यों में निबद्ध है। कथावस्तु की दृष्टि से रघुवंशम् की ही भाँति इस काव्य में भी महाराज दिलीप से प्रारम्भ करके अग्निवर्ण पर्यन्त रघुवंशी राजाओं का वर्णन किया गया है।

लघुरघुमहाकाव्य के **प्रथम सर्ग** में मंगलाचरण, सूर्यवंशप्रशंसा, महाराज दिलीप का जीवन चरित्र एवं पुत्रप्राप्ति के निमित्त दिलीप का महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में जाने का वर्णन किया गया है। **द्वितीय सर्ग** में सपत्नीक महाराज दिलीप के

द्वारा नन्दिनी की सेवा का वर्णन है। **तृतीय सर्ग** में रघु का जन्म, विवाह, राज्याभिषेक एवं महाराज रघु तथा इन्द्र का युद्ध वर्णित है। **चतुर्थ सर्ग** में रघुदिग्विजय के पश्चात् **पंचम सर्ग** में कुमार अज का विदर्भगमन वर्णित है। **षष्ठ सर्ग** में इन्दुमती का स्वयम्वर तथा **सप्तम सर्ग** में अज–इन्दुमती का विवाह वर्णित है। **अष्टम सर्ग** में अज–विलाप तथा **नवम सर्ग** में महाराज दशरथ की मृगया का वर्णन एवम् प्रसंगप्राप्त अन्धकमुनि तथा श्रवणकुमार की कथा वर्णित है। **दशम सर्ग** में राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न का जन्म एवम् **एकादश सर्ग** में महर्षि विश्वामित्र के साथ राम लक्ष्मण का वनगमन, विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा, ताड़का–सुबाहु–वध, अहल्योद्धार, धनुषभंग, सीतापरिणय, परशुराम आगमन तथा सीता के साथ राम का अयोध्या–गमन का वर्णन किया गया है। **द्वादश सर्ग** में राम–वनवास, दशरथ–मरण, भरत का चित्रकूट–गमन, विराध–वध, शूर्पणखा–प्रसंग, खरदूषण–वध, सीताहरण, सुग्रीवमैत्री, वालिवध, लंकादहन, सेतुबन्ध, मेघनादवध, कुम्भकर्णवध, रावणवध, श्रीरामविजय, सीता की अग्निपरीक्षा तथा श्रीराम का अयोध्या के लिये प्रस्थान वर्णित है। **त्रयोदश सर्ग** में श्रीराम का पुष्पक विमान पर आरूढ़ होकर नन्दीग्राम में गमन तथा भरत के साथ श्रीराम का मिलन वर्णित है। **चतुर्दश सर्ग** में श्रीरामराज्याभिषेक, सीतानिर्वासन तथा सीता का वाल्मीकि आश्रम में प्रवेश वर्णित है। **पंचदश सर्ग** में लव–कुश का जन्म, लवणासुर–वध, शम्बूकवध, अश्वमेधयज्ञ, भगवती सीता का पातालगमन एवं श्रीराम का परलोकगमन वर्णित है। **षोडश सर्ग** में कुश का कुमुद्वती के साथ विवाह तथा **सप्तदश सर्ग** में कुश के पुत्र अतिथि का वर्णन किया गया है। **अष्टादश सर्ग** में अतिथि के पुत्र निषध का वर्णन, तदनन्तर नल, नभ, पुण्डरीक, क्षेमधन्वा, देवानीक, अहीनुग, पारियात्र, शिल, उन्नाभ, वज्रणाभ, शंखण, व्युषिताश्व, विश्वसह, हिरण्याभ, कोशल्य, ब्रह्मिष्ठ, पुत्र, ध्रुवसन्धि, एवं सुदर्शन का नामोल्लेख है। इस ग्रन्थ के अन्तिम एवम् **उन्नीसवें सर्ग** में सुदर्शन के पुत्र **'अग्निवर्ण'** के वर्णन के साथ इस ग्रन्थ का अवसान होता है।

इस प्रकार महाकवि श्रीसीतारामभट्ट पर्वणीकर ने अपनी काव्यप्रतिभा का परिचय देते हुये उपर्युक्त विपुल काव्यसम्पत्ति के द्वारा आधुनिक संस्कृतसाहित्य की समृद्धि में जो योगदान दिया है, उसके लिए संस्कृत–जगत् उनका सदैव ऋणी रहेगा।

सन्दर्भ (REFERENCE)

1. यः पर्वणीग्रामविलब्धजन्मा, गुण्यग्रणी माधवभट्ट शर्मा।
   तथा महाराष्ट्रकुलप्रसूतिः काशीनिवासाप्त गुणस्तपस्वी।। जयवंशम्।। 10/61 ।।

   अगाधबोधो बुधसंसदन्तर्जयोद्धुरो धर्मधनः क्षमावान्।
   दानावदानैः स गृहीतकीर्तिः श्रीविष्णुवर्माणमवाप भूपम्।। जयवंशम्।। 10/62।।
2. जयवंशम्।। 10/63 –170 ।।
3. इति श्रीपर्वणीकरोपनामक–श्रीलक्ष्मणभट्टात्मज–सीतागर्भसम्भव–श्रीसीतारामकविविरचितया संजीवनी– समाख्यया समेतः श्रीकालिदासकृतौ कुमारसम्भवमहाकाव्ये .....सर्गः।।
4. यं प्रासूत सुतं पुरा च जननी नाम्ना सुहीरेति या,
   ख्यातो यस्य बुधेन्द्रमस्तकमणिः श्रीलक्ष्मणाख्यः पिता।
   यद् भातृद्वितयं महद्विजयते विद्वत्तया मण्डितम्,
   तेनाऽसौ रचिता कुमारविवृतिः संजीवनी जीवदा।।
   कुमारसम्भवम् महाकाव्य के सत्रहवें सर्ग की टीका का अन्तिम पद्य।।
5. टीकासंयुतकाव्यपंचकमथ स्तोत्राणि दिक्संख्यका–
   न्येकशच्छन्दसि चैक एव गणिते साहित्यशास्त्रे त्रयः।
   प्राक् काव्यद्वयटिप्पणी द्वयमिति ग्रन्थावली संगता,
   सीतारामकवेः कृतिः कृतिगते नक्षत्रमालायताम्।। कुमारसम्भवम् की टीका का अन्तिम भाग।।
6. निखिलेषु रसेष्वेव बालानां बुद्धिसिद्धये।
   नायिका–वर्णनं किंचित् क्रियते रामशर्मणा ।। 2।।
7. शृंगारलहरी ।। 21।।
8. श्लोकबद्धा सिद्धान्तकौमुदी ।। 1 एवं 47।।

9. रामेण सीतया पदेन क्लृप्तं सूर्याष्टकं भक्तियुतः पठेद्यः।
नैरोग्यमायुर्धन–धान्य–वृद्धिमासाद्य मुक्तिं च लभेत सोऽन्ते।। सूर्याष्टकम्।। 9।।

10. पंचानामपि देवानां गंगा – भैरवयोर्गुरोः।
मारुतेर्जम्बुवाहिन्या दश स्तोत्राणि मत्कृतिः।। सूर्याष्टकम्।। 10।।

11. यस्मादंजलि–जलदान–मात्र–तुष्टान्, मार्तण्ड–गद–हरणाय तं प्रपद्ये।। सूर्याष्टकम्।।

12. वसुन्धरायां नृपवीर–नामा, नराधिपोऽभूदनिवार्यवीर्यः।
गुणामृतं यस्य निपीयमाना, न के विमुह्यन्ति सुधातिशायी।। नृपविलासः।।

13. नृपविलासमहाकाव्यम्।। 1/54।।

14. 'जयवंशमहाकाव्य' राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से सन् 1952 ई. में प्रकाशित हो चुका है। इसके सम्पादक विद्यासागर पं. पट्टाभिराम शास्त्री (संस्कृत विभागाध्यक्ष, संस्कृत कालेज) हैं।

15. संवत्सरे अंक–वसु–नाग–धरासमाने, मासे मधौ सगुरुदर्शतिथौ स रामः।
सार्द्धैकयामसिमितेऽहनि वर्तमाने, पूर्णं चकार सरसं गुणिकाव्यरत्नम्।। नलविलासः।। 32/25।।

16. क्वासौ पदार्थो जयवंशनामा, क्वाहं विमूढोऽल्पमतिःप्रकामम्।
तद्ववर्ण्नेच्छा मयि सेयमस्ति, सिन्धोस्तितीर्षेव लघुप्लवेन।। जयवंशमहाकाव्यम्।। 1/2।।

17. क्रतुमुन्नतोऽहयमेधमसौ बहुदक्षिणं किल चिकीर्षुरभूत्।
ककुभांजयार्जितरयो नृपतिः सदनुष्ठितिः प्रकृतिदेव सताम्।। जयवंशमहाकाव्यम्।। 14/30।।

18. जयवंशमिदं काव्यं, जयरामानुजन्मना।
जयपत्तनभूपाल–जयसिंहाज्ञया कृतम्।। जयवंशमहाकाव्यम् के 19वें सर्ग का अन्तिम पद्य।।

19. राघवचरित्रमहाकाव्य की जीर्ण–शीर्ण पाण्डुलिपि आज भी पर्वणीकर संग्रहालय में सुरक्षित है।

20. संवत्सरे खांक–पुराणतुल्ये, मासे नभस्ये रवि–संक्रमोने।
कृष्णे दले च प्रतिपत्तिथौ च, वारे शनौ काव्यमिदं समाप्तम्।। लघुरघुकाव्यं।। 19/ ।।

प्रणव पाण्डेय
(एम.ए.संस्कृतविभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)
नेट (यू.जी.सी. नई दिल्ली)
मो. 7017458783